

FOUNDATION COURSE - HINDI
THIRD SEMESTER

COURSE : FOUNDATION – CORE
PAPER : EKANKI AUR ANUVAAD
TIME : 3 HOURS

MAX. MARKS : 100

SECTION - A

I किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (3X5=15)

1. पन्ना का चरित्र चित्रण लिखिए।
2. जीवनलाल प्रमोद से किस बात पर नाराज थे?
3. छाया और शेखर का दाम्पत्य जीवन कैसा था?
4. 'सबसे बड़ा आदमी' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।
5. 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी का उद्देश्य क्या है?

SECTION - B

II किन्हीं दो अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। (2X5=10)

6. राजपूतनी व्यापार नहीं करती, महाराज। वह या तो रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर।
7. हम दोनों नदी के दो किनारे हैं जो एक-दूसरे की ओर मुड़ते हैं पर मिल नहीं पाते।
8. कभी-कभी चोट भी मरहम का काम कर जाती है, प्रमोद।
9. गाँधी-गाँधी ! इन्हीं वकीलों के कारण तो हम अधःपतन की ओर बढ़े जा रहे हैं।
10. तुम्हारे पिता को राज्य की देखभाल का कार्य केवल इसलिए मिला कि मेरे पिता अन्धे थे।

III किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (3X10=30)

11. अनुवाद कितने प्रकार के होते हैं?
12. एक अच्छे अनुवादक में क्या क्या गुण होने चाहिए।
13. नाटक का अनुवाद करते समय क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए।
14. उपन्यास अनुवाद सम्बन्धी समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
15. अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद कितने प्रकार के होते हैं।
16. काव्यानुवाद पर लेख लिखिए।

SECTION – C

17. (a) 'भोर का तारा' एकांकी का सारांश लिखिए। (1X15=15)

अथवा

- (b) 'सबसे बड़ा आदमी' एकांकी का सारांश लिखिए।

18. हिन्दी में अनुवाद कीजिए। (1X15=15)

Once a poor man was put in jail although he had done no wrong . After a long time the Raja of the state visited the jail and the man told him that he was an innocent man against whom a case had been made up by his enemies. The king found out that this was true and gave the man sum of money and set him free. The man went straight to the market in which there was a shop where Bulbuls and other wild birds were kept in cages for sale. He said to the shopkeeper, 'I wish to buy all the caged birds. Shopkeeper asked why? Are you going to start a Zoological Garden?' Man answered, 'No, I am going to set them free.' And he did so.

19. अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए। (1X15=15)

यह कहना सच है कि मनुष्य की सेवा ही भगवान की सेवा है। रवीन्द्रनाथ टैगोर अपनी कविता 'इस भजन को छोड़ो' में कहते हैं कि भगवान कठोर परिश्रम करने वाले लोगों में मिल सकते हैं। वह सलाह देते हैं कि जनता की सेवा ही भगवान की सेवा है। सभी साधु-महात्माओं तथा धार्मिक गुरुओं ने मानवता की सेवा पर बल दिया है। यदि हमने एक जरूरतमंद आदमी की मदद की है, किसी परेशान दुखी के मन को शान्ति दी है। किसी गरीब की आँखों के आँसू पोंछे हैं तो हमने निश्चय ही निस्वार्थ कार्यों से भगवान की सेवा की है। यह कहा जाता है कि भगवान उनको प्यार करता है जो अपने साथियों से प्रेम करते हैं।
